वर्ष 7, अंक 3
ISSN 2456-3838



# पिक्चर प्लस

अक्टूबर 2023 ₹ 65

ज़िन्दगी का बायस्कोप

दादा साहेब फाल्के अवॉर्ड

## इस पुरस्कार की पॉलिटिक्स क्या है ?

ISSN 2456 - 3838
Licence N. F2(P19) PRESS 2016

पिक्चर प्लस
वर्ष-7, अंक-3, अक्टूबर, 2023
मासिक, द्विभाषिक/हिंदी-अंग्रेजी

संपादक
संजीव श्रीवास्तव

संपादन सहयोग
कल्पना कुमारी

कवर डिजाइन
ज़ाहिद मोहम्मद खान

लेआउट डिजाइन
शाश्वती

पंजीकृत पता
37/ए, तीसरी मंज़िल, गली नंबर 2
प्रताप नगर, मयूर विहार
फेज -1, दिल्ली - 110091

मूल्य- 65 रुपये (एक प्रति)
वार्षिक - 1,000 रुपये (व्यक्तिगत)
5,000 रुपये (संस्थागत)

पत्रिका के डिजिटल संस्करण नॉटनल
(www.Notnul.com) से खरीद सकते हैं।
संपर्क - 9313677771
Email: pictureplus2016@gmail.com

नोट : सभी रचनाओं में व्यक्त विचारों से पत्रिका की संपादकीय नीति, राजनीतिक विचारधारा तथा लेखक, प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं। पत्रिका के किसी भी पक्ष से संबंधित कानूनी निपटारे का न्यायिक क्षेत्र दिल्ली होगा।

(चित्र इंटरनेट से साभार व सभी पद अवैतनिक)

## अनुक्रम

04. संपादकीय : चलती का नाम गाड़ी : वो 'सलमान', मैं 'कैटरीना'
06. अरविंद कुमार : 'माधुरी' के वे दिन -'एक और सूर्योदय'
सच हुई 'माधुरी' की भविष्यवाणी
10. जवरीमल्ल पारख - दादा साहेब फाल्के अवॉर्ड की अहमियत
12. मनमोहन चड्ढ़ा- सोहराब मोदी को मिला महबूब खान क्यों छूटे?
13. डॉ. इंद्रजीत सिंह - शैलेन्द्र को मरणोपरांत मिले यह अवॉर्ड
14. शशांक दुबे -तीन दशक से किसी संगीतकार को नहीं मिला यह अवॉर्ड
16. प्रबोध कुमार गोविल-कई फैसलों से पुरस्कार की गरिमा को ठेस पहुंची
18. प्रताप सिंह- प्रतिमान बदले जाने की जरूरत
20. नरेन्द्र नाथ पांडेय - चलत मुसाफ़िर मोह लियो रे...
21. प्रकाश हिंदुस्तानी- अभिनेत्री नहीं, जादूगरनी !
22. दादा साहब फाल्के अवॉर्ड अब तक
23. रत्नेश कुमार -असमिया के 'दादा साहेब' को कौन जानता है?
25. मैं वहीदा रहमान - आज फिर जीने की तमन्ना है...
30. वीर विनोद छाबड़ा - हीरो, हीरोइन कोई हों, छाप छोड़ गईं वहीदा
34. दिनेश श्रीनेत- वहीदा: सिनेमा की लाइफटाइम अचीवमेंट
36. अजय ब्रह्मात्मज : सिनेमाहौल- शहर का नाम ही अपना लिया था
प्रयाग राज ने
38. श्याम बेनेगल- बड़ी फिल्म- मुजीबुर्रहमान पर बायोपिक क्यों बनाई?
40. नितीश रॉय- फिल्म सिटी में 'बांग्लादेश' बसाना आसान नहीं था
42. प्रहलाद अग्रवाल- विरासत के बोल- इक और बंगला बिका न्यारा!
44. विमल मिश्र - अब कैसे बनेगा बंगला न्यारा ...
48. रजनीश कुमार- पुस्तक प्लस - भारतीय साहित्य के निर्माता शैलेन्द्र
50. विनोद तिवारी - फिल्म पत्रकारिता-8; निर्देशन लचर है तो बाकी
'सही' कैसे है?
56. Vivek Shukla- Shahrukh Khan : Journey of Fauji to Jawan : Delhi Connection

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक संजीव श्रीवास्तव द्वारा 37-ए, गली नं, 2, प्रताप नगर, मयूर विहार, फेज-1, दिल्ली-110091 से प्रकाशित।
संपादक - संजीव श्रीवास्तव। चंद्रशेखर प्रिंटर्स, WZ / 439, नारायणा विलेज, नई दिल्ली - 110026 से मुद्रित।

# वो 'सलमान' मैं 'कैटरीना' !

संभवत: 'टाइगर ज़िंदा है' फिल्म के रिलीज से पहले का वाकया है। एक टीवी चैनल पर सलमान खान और कैटरीना कैफ का संयुक्त इंटरव्यू प्रसारित किया जा रहा था। पत्रकार ने कैटरीना से पूछा कि 'आपने अब तक जितने भी रोल किये हैं, उसे देखते हुए सलमान ने आपकी कब-कब सराहना की या उस पर कोई प्रतिक्रिया दी है?' सवाल सुनकर सलमान की तरफ देखते हुए कैटरीना थोड़ी देर खामोश रहीं फिर बोली- 'कभी नहीं। मैं तो कई बार तरस जाती रही हूं कि शायद मेरे काम को लेकर सलमान कभी कोई टिप्पणी करते। प्रशंसा ना सही, सुझाव देते। लेकिन कई बार मेरे पूछने पर भी सलमान ने कुछ नहीं कहा। अपने चेहरे पर अपने मन के भाव को आने नहीं दिया। बस चुपचाप रह जाते हैं।' यहां तक तो सामान्य सा जवाब था, लेकिन इसके बाद की पंक्ति काफी महत्वपूर्ण थी, जिसे मैं आपको आखिरी में बताउंगा।

दोस्तो, यह यकीन दिलाना बहुत आसान है और मुश्किल भी कि पिक्चर प्लस निर्लिप्त भाव से निकलने वाली पत्रिका है। इसे कोई नोटिस नहीं चाहिए और ना ही पुरस्कार व प्रशंसा। यह किसी को चुनौती देने या किसी का मूर्ति निर्माण या मूर्ति भंजन के लिए भी नहीं निकल रही है। जैसे हम खाते, पहनते हैं उसी तरह से यह पत्रिका निकालते हैं। यह हमारी स्वाभाविकता में शामिल है। इसके बदले में हमें किसी से वाहवाही या सहानुभूति जैसी भावना की कोई अपेक्षा नहीं है।

कुछ महीने पहले एक परिचर्चा में कुछ फिल्मी सितारों के विचार शामिल करने के मकसद से हमने वरिष्ठ साथी सिने समालोचक अजय ब्रह्मात्मज जी से फोन नंबरों का सहयोग मांगा, उन्होंने कहा- 'मैं दे देता हूं लेकिन मेरा मानना है फिल्मी सितारों के बजाय लेखकों पर ज्यादा भरोसा करना चाहिए। पत्रिका में उनको अधिक से अधिक शामिल करें।' उनका आशय यह था कि आमतौर पर फिल्मी सितारों के पास टिप्पणी करने के लायक विचार जैसी चीज़ें कम होती हैं, यह काम लेखक ज्यादा संप्रेषणीय तरीके से कर सकते हैं।

हालांकि पिक्चर प्लस में शुरुआत से ही लेखकों की सहभागिता बनी हुई है। फिर भी उनकी इस बात से मुझे बल मिला। हमारा मानना रहा है कि ऑडिनरी आर्टिकल यानी जन्म-तिथि, पुण्य तिथि विशेष या फिर फिल्मी सितारों पर बायोग्राफिकल पुराने लिखे, लिखाये लेखों का संकलन कर देने से क्या होगा? यह किस कमी की पूर्ति करेगा? जो तथ्य और विश्लेषण गूगल के आर्काइव में है, उसे अप्रासंगिक तरीके से निकालकर प्रकाशित कर लेने से क्या फायदा है? या बिना किसी प्रसंगवश मैं बड़े लेखकों की किताबों से साभार लेख प्रकाशित कर लूं तो इससे क्या हो जाएगा?

माफी चाहता हूं जो लोग भी ऐसी सोच या अपेक्षा रखते हैं, वे इसके नतीजे तो दूर की बात है, पठनीयता की भी उम्मीद न रखें। यह तथ्य सर्वविदित है कि इस तरह के लेखों को बहुत कम ही लोग आधा-अधूरा पढ़ रहे हैं। हालांकि पिक्चर प्लस में हमने कई बार लेखकों की किताबों या पुराने प्रकाशित लेखों को दोबारा प्रस्तुत किया है लेकिन सप्रसंग; यूं ही पन्ने भरने के लिए कदापि नहीं। हमें समझना होगा कि आज के पठनीयता के संकट के दौर में अगर हमें पाठकों के बीच जगह बनानी है तो सार्थकता से लैस नवीनता के साथ प्रस्तुत होना होगा। लेखन और प्रस्तुतिकरण में इन दोनों का संगम जरूरी है। अघाई बेला में घिसे पिटे आशय या विकिपीडियाई लेखों का कोई औचित्य नहीं है। पिक्चर प्लस हर अंक में अपनी सीमाओं में भरसक नई प्रवृति से युक्त है। इसीलिए हम कवर स्टोरी को नये मिजाज के साथ प्लान करते हैं। ताकि नवीनता का बोध और सार्थकता का भी अहसास हो। ताजा अंक को ही लें। दादा साहेब फाल्के अवॉर्ड अब तक किन-किन कलाकारों को मिल जाना चाहिए, यह सवाल हम हर साल तब करते हैं जब इस पुरस्कार की घोषणा की जाती है। इस विषय पर हमने परिचर्चा में शामिल होने के लिए मेरी जानकारी के करीब पिचानवे फीसदी हिंदी के सिने समालोचकों से मैंने अनुरोध किया। हो सकता है पांच फीसदी अनजाने में छूट गये होंगे। समय सीमा के भीतर जितने भी सहयोगियों ने अपनी-अपनी टिप्पणियां भेजीं, उन सबको यहां प्रकाशित किया गया है। सबका आभार।